(1)

आयुष्य-पथ पर आयुष ग्राम चित्रकूट की सतत-यात्रा

आध्यात्मिक-चेतना से अनुप्राणित एवं प्राकृतिक-सौन्दर्य से ओत-प्रोत भारत का पावन-पवित्र-पुरातन तीर्थ-स्थल चित्रकूट जिसके वन-वैभव, उपवन, सर-सरित गहन-गिरि-कानन कुंज लताओं ने त्रेता-युग में मर्यादा-पुरुषोत्तम भगवान राम को अपने सद्गुण-आकर्षण में आबद्ध कर लिया था जिसकी पवित्र-भूमि ने संत-कवि तुलसी को उस राम के दिव्य-दर्शन का मार्ग प्रशस्त किया था,

'तुलसी दास चंदन घिसे तिलक देत रघुवीर'

भारत-वर्ष की आध्यात्मिक-चेतना का पावन-परम-प्रतीक चित्रकूट अलौकिक है, अभिराम है, नयनाभिराम है परम-धाम निष्काम है जहाँ के मन्दिरों में देश-देशान्तरों के तीर्थयात्री धूप-दीप नैवेद्य अर्पित कर स्वयं को धन्य कर लेते हैं।

मनः संताप से विमुक्त कर लेने वाले इन देवालयों के अतिरिक्त तन के ताप को हरण करने वाले मन्दिर विशेष की चर्चा न हो तो चित्रकूट की गरिमा-गाथा अपूर्ण रह जायेगी।

यह मन्दिर-विशेष है- आरोग्य मन्दिर 'आयुष-ग्राम' जो चित्रकूट के अध्यात्म और स्वास्थ्य का सेतु है।

भारतीय मनीषा ने जगत-कल्याण-हेतु दो अनुपम उपहार दिये - देवालय और चिकित्सालय। देवालय मानव-मन को आध्यात्मिक-चेतना से अभिसिंचित करने हेतु और चिकित्सालय 'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्' की प्राण-प्रतिष्ठा-निमित्त।

इस पावन-पूत-पुरातन चित्रकूट में जहाँ एक ओर राम घाट के चतुर्दिक आस्था और भक्ति-भाव के अनेकानेक देवालय हैं तो दूसरी ओर कर्वी स्टेशन से लगभग पन्द्रह किलोमीटर दूरस्थ आयुर्वेद चिकित्सालय 'आयुष ग्राम' जिसकी प्रसिद्धि की विस्तार-सीमा प्रदेश से विस्तारित हो कर राष्ट्रीय-क्षितिज स्पर्श करने हेतु अग्रसर है।

भारतीय ज्योतिष का पंचांग और आयुर्वेद का अष्टांग दोनों ही सूर्य और चाँद की तरह हैं जिसकी अलौकिक आभा से सम्पूर्ण जगत विस्मय-विमुग्ध-चकित-चमत्कृत है।

इन दोनों क्षेत्रों में जितने नित-नवीन शोध और अनुसंधान

होंगे उतने ही ज्ञान के नये क्षितिज खुलेंगे। भारत के चिकित्सा-विज्ञान आयुर्वेद के समक्ष आज विश्व नत-मस्तक हो रहा है अपनी इस विरासत पर जो गर्व न करे उससे बड़ा अभागा दूसरा कौन होगा? विश्व की किसी भी चिकित्सा-पद्धति से आयुर्वेद की समता ही क्या है अपनों ही द्वारा प्रायोजित षड्यंत्र-जनित-आत्महीनता ने हमारा कितना अपकार किया है, विज्ञ-जन ही विचार करें।

समस्त चिकित्सा-पद्धतियों की जननी आयुर्वेद को प्राचीन ज्ञान-सम्पदा को साकार रूप देने में आयुष-ग्राम चित्रकूट का उदय एक सजग-प्रहरी के रूप में हुआ है इसमें यत्किंचित-कथमपि सन्देह नहीं।

एक हृदय-रोगी के रूप में मैं स्वयं इस तथ्य का साक्षी हूँ। मैं किसी अतिशयोक्ति या अतिरंजना की भाषा नहीं बोल रहा हूँ। आयुर्वेद वह दैव-चिकित्सा है जो शाश्वत-सत्य-सनातन है, जो सिद्ध है प्रसिद्ध है जिसमें अष्ट-सिद्धियाँ हैं। यह कोई अत्युक्ति नहीं, मेरे जैसे स्वास्थ्य-लाभ करने वाले रुग्ण-जन के चित्त के सहज उद्गार और अनुभव अनुभूति है।

उम्र के 76 वें वर्ष का स्पर्श करते ही मेरे हृदय की तीन धमनियों में अवरोध हो गया; रक्त-संचरण में रुकावट। 80% प्रतिशत से ऊपर अवरोध। इस उम्र के कई डाक्टर और मेदांता के शल्य-चिकित्सक डॉ० नरेश त्रेहान ने कहा कि इसका एक मात्र उपचार है - शल्य-चिकित्सा - बाई-पास सर्जरी। लखनऊ मेदांता के डाक्टरों ने भी कहा कि तुरंत आपरेशन करा लीजिये अन्यथा आप एक दो माह के मेहमान हैं।

इन चिकित्सकों के भविष्य-कथन से मेरे परिवार के लोग विचलित हो गये। लेकिन मैं मन ही मन सोचने लगा कि मेरे जीवन के संबंध में भविष्य-कथन का अधिकार इन डाक्टरों को कहाँ से मिल गया है इन डाक्टरों को न ज्योतिष के पंचांग का ज्ञान है न आयुर्वेद के अष्टांग का।

हमारी वेद-कालीन सनातन चिकित्सा पद्धति, हमारा आयुर्वेद हमारी उपनी चिकित्सा पद्धति, हमारा योग, हमारे

ऋषि-मुनियों की दिव्य वाणी, हमारे चरक, सुश्रुत और वाग्भट्ट जैसे ऋषि-चिकित्सकों की चरण-धूलि बराबर नहीं हैं। आज के कुछ चिकित्सक। सदियाँ बीत गयीं हमारे चरक सुश्रुत, वाग्भट्ट जैसे ऋषि-चिकित्सक तो अमर हैं।

अमर बेलि की वह लता जिसे समय के झंझावात शुष्क नहीं कर सकते।

क्या नहीं है आयुर्वेद में? आयुर्वेद विज्ञान है, आयुर्वेद दर्शन है, आयुर्वेद काव्य है। आयुर्वेद के सिद्धान्तों और सूत्रों को सरस पंक्तियों में प्रस्तुत करने की कला तो इन्हीं आचार्यों के पास थी। कदाचित् इसीलिये वैद्य को कवि नहीं अपितु कविराज की संज्ञा से विभूषित किया गया है।

इस जगत में जो भी द्रव्य है वह आयुर्वेद की व्यापक परिधि में औषधि के अन्तर्गत है। बाल रवि की रजत-रश्मियाँ औषधि हैं, चारु चंद्र की चंचल किरणें औषधि हैं, उषा कालीन मंद मलय-समीर औषधि है, अमृत प्रवाहिनी नदियों का नीर औषधि है, देवोपासना औषधि है, कहीं कहीं तो वासना भी औषधि है।

और तो और। स्त्रियों के अनेक रोगों के शमन-हेतु, पुरुष का स्नेहिल-सान्निध्य औषधि है और पुरुष के लिये स्त्रियों के ऋजु-कुटिल-प्रसार कोमल कुंतलों की मादक सुरभि औषधि है। स्त्री-पुरुष परस्पर औषधि हैं। इस परम-गोपन-रहस्य की व्याख्या आयुर्वेद जैसे महा-शास्त्र के अतिरिक्त अन्यत्र संभव नहीं।

आयुर्वेद के इस सरस-सहज-रमणीय निकुंज को छोड़ कर मैं भला किसी अन्य चिकित्सा के भयावह भयंकर-डरावनी सर्जरी के बीहड़-वन में कैसे भटकता?

और मैं चला आया- आयुष-ग्राम चित्रकूट आयुष ग्राम चित्रकूट भी क्या है। आस्था- विश्वास और स्वास्थ्य-लाभ का अनुपम आरोग्य-मन्दिर।

मेरे लिये तो ~~देवालय~~ चिकित्सालय नहीं देवालय है। प्रकृति की गोद में स्थित। विस्तृत परिसर, विशाल भवन भारतीय ज्ञान-विज्ञान को समेटे संस्कृत विद्यालय, सात्विक, सुस्वादु स्वास्थ्यकर भोजनालय, कहीं गोशाला, कहीं गजशाला। प्राचीनता और आधुनिकता का अद्भुत संगम। आधुनिकता का स्वागत और अपनी प्राचीन ज्ञान-सम्पदा पर गर्व और गौरव। सम्पूर्ण परिसर प्राचीनता और आधुनिकता के मिलन-भाव का द्योतक।

चिकित्सालय की ~~दीवारों~~ दिवारों पर यत्र-तत्र अंकित आयुर्वेद ग्रंथों के सूत्र और सूक्तियाँ। औषधि ग्रहण के मंत्र। सुहृद जन स्मरण, गुरु स्मरण देव स्मरण।

कदाचित विश्व की एक मात्र चिकित्सा-पद्धति जहाँ औषधि ग्रहण के पूर्व देवताओं को स्मरण किया जाता है। एक मात्र सात्विक-चिकित्सा। मिट्टी के पात्र में औषधि-ग्रहण। मिट्टी के पात्र का मूल्य कुपात्र क्या समझे? कहाँ आयुर्वेद के मंत्रों की मंत्रणा और कहाँ सर्जरी के कष्टकारक यंत्रों की यंत्रणा।

विस्मय-विमुग्ध-भाव से मैं सम्पूर्ण परिसर का अवलोकन कर रहा था। मन ही मन पंच कर्म के मर्म को आत्मसात कर रहा था। आयुर्वेद रूपी सागर को लघु नेत्रों के गागर में कैसे भरूँ सोच रहा था तभी बहिरंग रोगी कक्ष (OPD) में मुझे बुलाया गया।

22 अप्रैल 2022 – मेरे उपचार का प्रथम दिन। लगभग चार बजे संध्या। प्रधान चिकित्सक डॉ० मदन गोपाल वाजपेयी से प्रथम साक्षात्कार। प्रधान चिकित्सक जिन्हें चिकित्सालय के कर्मी (Staff) श्रद्धापूर्वक गुरु जी की संज्ञा से अभिहित करते हैं। क्यों न कहें? जिसके व्यक्तित्व में गुरुता और गुरुत्वाकर्षण हो वही तो गुरु है। भूत-भावन भगवान शंकर को भी गुरु कहा गया है। वंदे बोध मयं

नित्यं गुरु शंकर रूपिणम्। भगवान शंकर भी तो किसी न किसी रूप में वैद्य हैं तभी तो उनका एक विग्रह देवघर (झारखंड) में वैद्यनाथ रूप में है।

विशाल-वातानुकूलित कक्ष में चिकित्सक के पवित्र आसन पर विराजमान डॉ० वाजपेयी। मेरी दृष्टि पड़ी — सेवा भाव की निश्छल सौम्य-मूर्ति। चंदन चर्चित दिव्य-ललाट पर रोली के तिलक-बिन्दु की रक्ताभा। शुभ्र तन, शुभ्र मन, शुभ्र वसन और शुभ्र वचन।

जाँचोपरान्त उन्होंने पहला वचन दिया कि आपको कभी भी हृदयाघात नहीं होगा। यही बात उन्होंने मेरी फाइल पर भी लिख दी। आत्म विश्वास के साथ। दवा देने के पहले उन्होंने दावा कर दी कि आप बिल्कुल स्वस्थ हैं, चिन्ता न करें। हृदय में रक्त संचरण के अन्य कई मार्ग खुल जायेंगे। इतना कहते ही मैं तत्क्षण स्वस्थ हो गया। पता नहीं मेरी सारी दुर्बलता कहाँ चली गयी। यह है चिकित्सक की वाणी और आयुर्वेद का चमत्कार।

उन्होंने कहा कि औषधियाँ निर्देशानुसार लेते रहें। हृदयाघात कभी नहीं होगा, कभी नहीं होगा, कभी नहीं।

आयुर्वेदज्ञ का कथन तो ब्रह्म-वाक्य होता है अमोघ ब्रह्मवाक्य।

आयुर्वेद की कटु-तिक्त कषाय औषधियाँ मेरे लिये अमृत-तुल्य हो गयीं।

"रुग्ण होना चाहता कोई नहीं-
रोग लेकिन आ गया जब पास हो
तिक्त औषध के सिवा उपचार क्या
शमित वह होगा नहीं मिष्ठान से।"
(रामधारी सिंह 'दिनकर')

इन औषधियों में मुझे मधु का स्वाद मिलने लगा। आदरणीय डॉ० वाजपेयी ने मुझे पहले दिन ही स्वस्थ कर दिया, प्रथम साक्षात्कार में ही।

कुशल चिकित्सक का व्यक्तित्व और वाणी तो प्रधान औषधि है। सुविज्ञों रोगियों के समक्ष आयुर्वेद के चिकित्सा-ग्रन्थों की उक्तियाँ डॉ० वाजपेयी की वाणी से पियूष-धारा की तरह प्रवाहित होती रहती है। श्रद्धेय गुरु जी तो आयुर्वेद के प्रगति-पथ के सतत् यात्री हैं, थकते नहीं, रुकते नहीं। उनका सम्पूर्ण जीवन आयुर्वेद को समर्पित है, आयुर्वेद में वे रमण करते हैं, भ्रमण करते हैं। सम्पूर्ण जीवन आयुर्वेद मय है।

आज की अर्थपिशाची वृत्ति में आकंठ डूबी हुयी विदेशी चिकित्सा-पद्धति ही सम्पूर्ण रोगों की जड़ है जो रक्त पिपासु बन कर रोगियों का रक्त चूस रही है। अर्थ (द्रव्य) के लिये इतना आग्रह।

तथा ऐसी ही चिकित्सा के लिये हमारे ऋषि-मुनियों ने सम्पूर्ण जीवन का उत्सर्ग किया था। रोगों का शमन करने वाली चिकित्सा पद्धति भारतीय परिवेश के लिये कितनी उपयोगी है, विज्ञ-जन ही विचार करें।

इस विषम-परिवेश में आयुर्वेद का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। ऐसे में हमें अपने प्राचीन तंत्र को विकसित करना होगा जो काल की निर्मम-धारा में विलुप्त होती जा रही है. उसे आयुष ग्राम नित नव-संजीवनी दे रहा है।

नाड़ी-परीक्षण, पंचकर्म, रेचन, विरेचन आदि इस प्राचीन चिकित्सा-पद्धति के महान आविष्कार हैं। चिकित्सा की जो चरम संभावना है वह आयुर्वेद में साकार है।

आयुष-ग्राम में तो मात्र नाड़ी-परीक्षण से ही अनेक रोगों का निदान हो जाता है। क्या आवश्यकता है आधुनिक यंत्रों पर निर्भर होने का अथवा अनावश्यक व्यय करने का।

आयुष ग्राम का अपना औषधालय है जहाँ औषधियाँ प्रधान चिकित्सक की देख रेख एवं निर्देशन में

निर्मित होती हैं जो मात्र इस चिकित्सालय के रोगियों के
प्रयोजनार्थ हैं, जिनका अन्यत्र विक्रय या व्यापार नहीं होता।
कुछ ही औषधियाँ बाहर से आयातित होती हैं जो अति
विश्वसनीय एवं प्रामाणिक होती हैं।

मेरे जैसे अल्पज्ञ को इन औषधियों का
क्या ज्ञान ?

केशर कस्तूरी, मकरध्वज, शिलाजीत, स्वर्ण-भस्म
रजत, ताम्र, लौह, पारा, त्रिफला गिलोय आदि सहस्त्रों
औषधियाँ। इन औषधियों का जोड़ विश्व में कहीं
किसी चिकित्सा-पद्धति में नहीं। आयुर्वेद की ये औषधियाँ
सीमा से परे असंख्य संख्यातीत हैं।

आयुष ग्राम चित्रकूट का औषधालय तो
इन औषधियों का रत्नाकर है। ये औषधियाँ मानव-जाति
के लिये वरदान हैं।

विश्व में ऐसी कोई व्याधि नहीं जिसका
उपचार आयुर्वेद में न हो। विगत तीन सौ वर्षों में,
विशेषकर ब्रिटिश-शासन काल में आयुर्वेद को समूल
नष्ट करने के न जाने कितने षड्यंत्र किये गये। किंतु
आयुर्वेद का वह स्वर्णिम अतीत है जो कभी व्यतीत
~~नहीं है~~ नहीं हो सकता। काल के भाल पर वह
अमिट स्वर्ण-चिह्न की तरह अंकित है। इसकी विजय-
पताका दिगदिगन्त आकाश की ऊँचाइयों को स्पर्श करती जा
रही है।

दुःख और संताप की इस घड़ी में जहाँ नित
नये रोग पनप रहे हैं तब मानव-जाति के पास दो
ही विकल्प हैं - मृत्यु की ~~अंधी घाटी~~ अंधी-घाटी
में छलांग अथवा आयुर्वेद की शरणागति।

सौभाग्य से हमारे पास बिना किसी राजकीय
सहायता से संचालित होने वाला आयुष-ग्राम जैसा
चिकित्सालय है जो आयुष्य-पथ पर अविराम गति
से गतिशील है।

देश में आयुर्वेद के अन्य दूसरे संस्थान भी हैं। इस प्राचीन-पद्धति के विकास का यह शुभ-लक्षण है। किंतु आयुष-ग्राम की अद्वितीयता ही इसकी शक्ति है जो इसे अन्य चिकित्सालयों से पृथक करती है। यहाँ के सभी कर्मी (Staff) अपने कार्य के प्रति समर्पित और ईमानदार। परिचारकायें तो माँ सेवा की मूरतियाँ हैं, वनदेवियों की तरह निश्छल और पवित्र।

मुझे आयुष प्रदान करनेवाले आयुष-ग्राम-परिवार को धन्यवाद किन शब्दों में दूँ मैं तो स्वास्थ्य-लाभ पाकर स्वयं धन्य-धन्य हो गया।

प्रो० अजीत कुमार सिंह
पूर्व प्राचार्य एवं
विभागाध्यक्ष
जी० बी० महाविद्यालय
रामगढ़ (कैमूर)
बिहार

Mob. 6207866625
BUXAR
BIHAR